International Journal of Advanced and Applied Sciences, 12(12) 2025, Pages: 157-173

International Journal of Advanced and Applied Sciences

Journal homepage: http://www.ijaas.in

विवाहिक सुख प्राप्ति में ग्रहों की स्थिति और दृष्टियों का प्रभाव: एक सांख्यिकीय एवं ज्योतिषीय विश्लेषण

Radha Gupta [1]*, Dr. Om Prakash Sharma [2]

[1] *Research Scholar, Department of Astrology, Mewar University, Rajasthan, India*
[2] *Associate Professor, Department of Astrology, Mewar University, Rajasthan, India*

ARTICLE INFO

Article history:
Received: 18-11-2025
Received in revised form: 22-11-2025
Accepted: 30-11-2025

Keywords:

वैवाहिक सुख, सप्तम भाव, दृष्टि, ग्रह योग, वैदिक ज्योतिष, सांख्यिकीय विश्लेषण

ABSTRACT

विवाहिक जीवन मानव जीवन का एक अहम पहलू है, जिसे सामाजिक, मानसिक और भावनात्मक संतुलन का आधार माना जाता है। वैदिक ज्योतिष में ग्रहों की स्थिति, दृष्टि और भावों की आपसी स्थिति को वैवाहिक सुख का मुख्य निर्धारक माना गया है। इस अध्ययन का उद्देश्य यह समझना है कि जन्मकुंडली में सप्तम भाव, शुक्र, गुरु, मंगल और राहु/केतु जैसे ग्रहों की स्थिति और दृष्टि विवाहिक सुख को किस हद तक प्रभावित करती है। इस शोध में 100 व्यक्तियों की कुंडलियों का सांख्यिकीय और ज्योतिषीय विश्लेषण किया गया, जिसमें विभिन्न ग्रह योगों और दृष्टियों के प्रभावों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया। परिणामों से यह स्पष्ट हुआ कि गुरु और शुक्र की शुभ दृष्टि वैवाहिक जीवन में स्थायित्व और सुख प्रदान करती है, जबकि मंगल, राहु या शनि की अशुभ दृष्टि से वैवाहिक जीवन में तनाव की संभावना बढ़ जाती है।

© 2025 The Authors. Published by IASE. This is an open access article under the CC BY-NC-ND license (http://creativecommons.org/licenses/by-nc-nd/4.0/).

प्रस्तावना

भारतीय समाज में विवाह केवल दो व्यक्तियों का मिलन नहीं होता, बल्कि यह दो परिवारों और संस्कृतियों का संगम भी होता है। वैदिक ज्योतिष के अनुसार, हर व्यक्ति का जीवन ग्रहों की चाल और उनके आपसी संबंधों से प्रभावित होता है। वैवाहिक जीवन की सफलता में सप्तम भाव, शुक्र, गुरु और मंगल की भूमिका अत्यधिक महत्वपूर्ण मानी जाती है। ज्योतिषीय मान्यता के अनुसार, यदि ये ग्रह शुभ स्थिति में हों और एक-दूसरे पर सकारात्मक दृष्टि डालें, तो वैवाहिक जीवन में संतुलन, प्रेम और दीर्घकालिक संबंध संभव होते हैं। इसके विपरीत, अशुभ दृष्टि या दोष (जैसे मंगल दोष, कालसर्प योग, शनि की दृष्टि) के कारण वैवाहिक जीवन

में तनाव, असहमति या विलंब हो सकता है।

वैदिक ज्योतिष के अनुसार, प्रत्येक व्यक्ति का जीवन ग्रहों की स्थिति और उनकी चाल से प्रभावित होता है। जन्म कुंडली में सप्तम भाव को विवाह और जीवनसाथी का भाव माना गया है। यदि इस भाव में स्थित ग्रह शुभ फल देने वाले हों, या शुक्र, गुरु तथा मंगल की स्थिति अनुकूल हो, तो विवाह सुखद, संतुलित और स्थायी माना जाता है। शुक्र प्रेम, सुख और आकर्षण का कारक ग्रह है; गुरु बुद्धि, नैतिकता और समर्पण का प्रतिनिधित्व करता है, जबकि मंगल दांपत्य जीवन में उत्साह और ऊर्जा प्रदान करता है। इन ग्रहों की शुभ स्थिति और पारस्परिक समन्वय वैवाहिक जीवन में सौहार्द और स्थिरता लेकर आते हैं।

वहीं, ज्योतिषीय मतानुसार यदि इन ग्रहों पर अशुभ दृष्टियाँ अथवा दोष जैसे मंगल दोष, कालसर्प योग या शनि की प्रतिकूल स्थिति होती है, तो व्यक्ति को विवाह में विलंब, असहमति, या जीवनसाथी के साथ समरसता स्थापित करने में कठिनाइयाँ हो सकती हैं। मंगल दोष विशेष रूप से विवाह में कलह या मानसिक तनाव का कारण बन सकता है, जबकि शनि की दृष्टि संबंधों में दूरी या ठंडापन उत्पन्न कर सकती है।

इस कारण से भारतीय समाज में विवाह से पूर्व कुंडली मिलान की परंपरा अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती है। यह केवल भविष्यवाणी का साधन नहीं बल्कि दो परिवारों के बीच सामंजस्य और जीवन की संभावित दिशा का संकेतक भी होती है। अंततः, ज्योतिष केवल एक दिशा देता है, किंतु वैवाहिक जीवन की वास्तविक सफलता आदर, विश्वास, संवाद और पारस्परिक समर्पण पर निर्भर करती है।

विवाह सुख में सहायक ग्रहों की स्थिति

- **शुक्र:** प्रेम, स्नेह और विवाह का कारक। मजबूत शुक्र एक सुखी और संतुष्ट वैवाहिक जीवन का संकेत देता है।

- **गुरु:** बुद्धि, ज्ञान और समृद्धि का ग्रह। शुभ गुरु वैवाहिक जीवन में वफादारी और सम्मान सुनिश्चित करता है।
- **सप्तम भाव:** जीवनसाथी और दांपत्य सुख का प्रतिनिधित्व करता है। इस भाव का स्वामी मजबूत हो तो अच्छा वैवाहिक जीवन मिलता है
- **चंद्र:** भावनात्मक स्थिरता और सहानुभूति का प्रतीक।
- 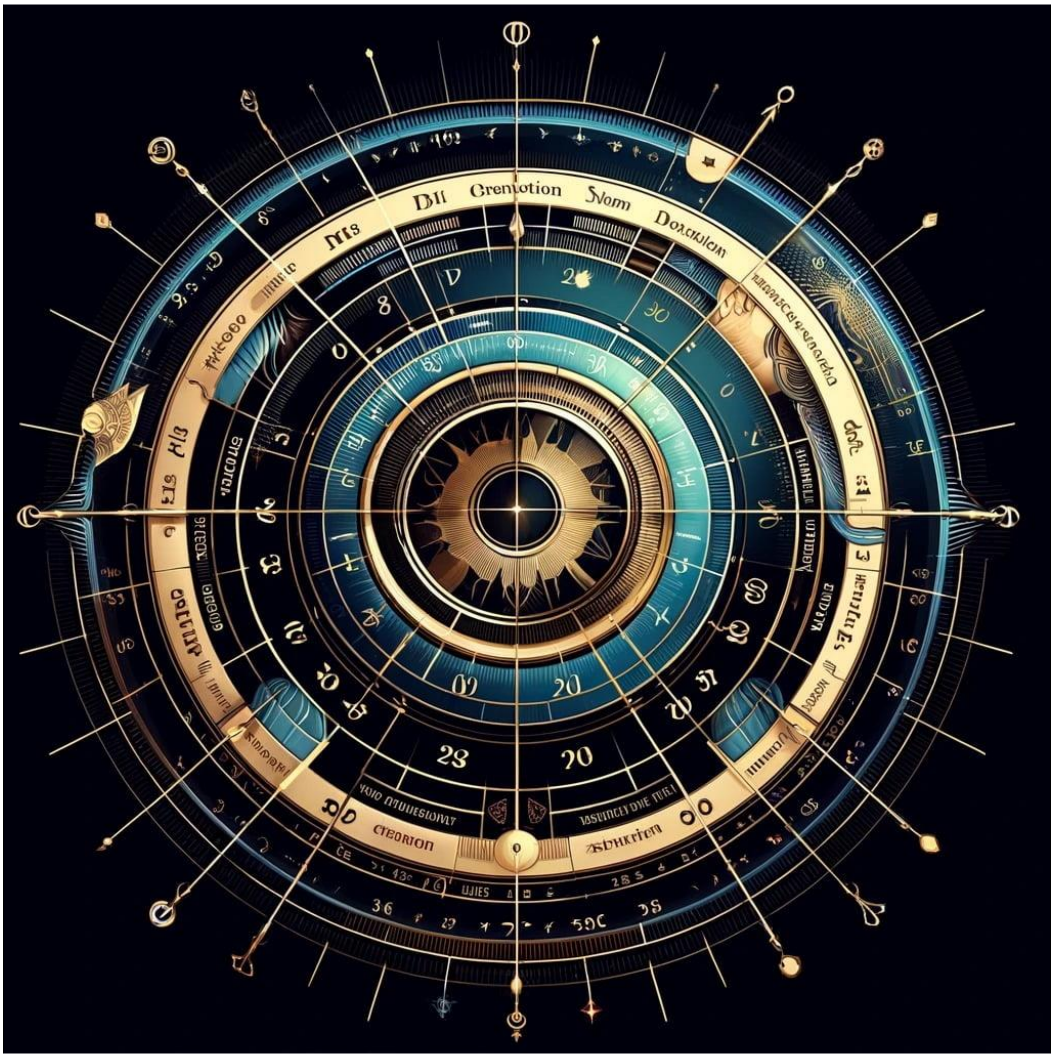

https://blog.pocketpandit.com/planetary-degrees/

विवाह में बाधा डालने वाले योग और ग्रह

- **मंगल दोष:** मंगल का सप्तम, अष्टम या अन्य भावों में अशुभ स्थिति में होना विवाह में देरी और कलह का कारण बन सकता है।
- **अशुभ ग्रहों की युति:** सप्तम भाव में शनि, राहु या केतु की उपस्थिति विवाह में बाधा या विलंब कर सकती है। राहु वैवाहिक जीवन में दूरी या रिक्तता का भाव भी पैदा कर सकता है।
- **कमजोर सप्तमेश:** यदि सप्तम भाव का स्वामी पीड़ित या कमजोर हो तो वैवाहिक सुख में कमी आती है।
- **अशुभ ग्रहों की दृष्टि:** शनि, मंगल या राहु जैसे पाप ग्रहों की सप्तमेश पर दृष्टि दांपत्य सुख को कम कर सकती है।
- **शुक्र का पीड़ित होना:** यदि शुक्र कमजोर या पीड़ित हो तो भावनात्मक जुड़ाव में कमी आ सकती है।

सांख्यिकीय विश्लेषण (ज्योतिषीय दृष्टि से)

- **सकारात्मक प्रभाव:**
    - सप्तम भाव में शुक्र की स्थिति अनुकूल वैवाहिक जीवन और वफादार जीवनसाथी देती है।
    - सप्तमेश का मजबूत होना और शुभ ग्रहों (गुरु, बुध) की दृष्टि दांपत्य सुख को बढ़ाती है।

    - शुक्र और गुरु का कुंडली के १, ५, ७, ९, या ११वें भाव में अनुकूल स्थिति में होना सुखी विवाह का संकेत देता है।
- **नकारात्मक प्रभाव:**
    - सप्तम भाव में शनि और राहु की उपस्थिति विवाह में विलंब कर सकती है, लेकिन वैवाहिक जीवन में स्थिरता भी दे सकती है।
    - सप्तम भाव में राहु की उपस्थिति में वैवाहिक जीवन में रिक्तता की भावना आ सकती है।
    - सप्तमेश का शुक्र से छठे या आठवें भाव में होना सुख में कमी लाता है।
    - सप्तमेश और सप्तम भाव पर शनि, मंगल, या राहु का अशुभ प्रभाव दांपत्य जीवन को प्रभावित कर सकता है।

साहित्य समीक्षा

भारतीय ज्योतिषशास्त्र में वैवाहिक सुख और स्थिरता का अध्ययन एक महत्वपूर्ण विषय रहा है। पारंपरिक ग्रंथों से लेकर आधुनिक सांख्यिकीय शोधों तक, ग्रहों की स्थिति, दृष्टियों और योगों के आधार पर वैवाहिक जीवन के परिणामों का आकलन करने के कई प्रयास किए गए हैं। यहां उपलब्ध साहित्य का व्यवस्थित रूप से विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

सप्तम भाव, शुक्र एवं गुरु का प्रभाव

ज्योतिष शास्त्र के अनुसार सप्तम भाव व्यक्ति के विवाह, जीवनसाथी तथा दांपत्य सुख का प्रमुख सूचक होता है। यदि यह भाव शुभ ग्रहों से प्रभावित हो या इसका स्वामी बलवान हो, तो जातक को स्थिर, प्रेमपूर्ण और सुखद वैवाहिक जीवन प्राप्त होता है।

आचार्य सतविंदर (2023) के अनुसार, जब शुक्र सप्तम भाव में स्थित हो और उस

पर गुरु की दृष्टि हो, तो यह संयोजन दांपत्य जीवन में प्रेम, विश्वास और पारस्परिक सम्मान को बढ़ाता है। इसी प्रकार *एनीटाइम एस्ट्रो* (2022) में बताया गया है कि शुक्र और गुरु की अनुकूल स्थिति विवाह में सौहार्द और स्थायित्व लाती है।

पारंपरिक ज्योतिषीय साहित्य

(क) पराशर ऋषि – "बृहत् पराशर होरा शास्त्र"

पराशर के अनुसार, सप्तम भाव, शुक्र और सप्तमेश वैवाहिक सुख के मुख्य संकेतक हैं। इस ग्रंथ में स्पष्ट कहा गया है कि यदि सप्तम भाव शुभ ग्रहों से दृष्ट हो या शुक्र उच्च अवस्था में हो, तो वैवाहिक जीवन मधुर, स्थिर और समृद्ध होता है। वहीं, शनि, मंगल या राहु-केतु के अशुभ प्रभाव सप्तम भाव पर पड़ने से वैवाहिक जीवन में तनाव, विलंब या संतोष की कमी देखी जा सकती है। यह ग्रंथ वैवाहिक विश्लेषण के पारंपरिक नियमों की नींव रखता है।

(ख) महर्षि भृगु – "भृगु संहिता"

भृगु (2015) द्वारा वर्णित भृगु संहिता में दंपति जीवन के संकेतों का विस्तृत विवरण है। इसमें शुक्र को दाम्पत्य सुख का "कारक ग्रह" कहा गया है। ग्रंथ यह भी बताता है कि यदि शुक्र निर्बल हो, राहु के साथ युति में हो, या अशुभ दृष्टि में हो, तो विवाहोपरांत जीवन में मतभेद या मानसिक क्लेश होने की संभावना रहती है। भृगु संहिता यह भी संकेत देती है कि मंगल की सप्तम स्थिति वैवाहिक तनाव, क्रोध और अनुकूलन समस्याओं का कारण बन सकती है।

आधुनिक ज्योतिषीय व्याख्याएँ और समकालीन समीक्षा

आधुनिक ज्योतिषाचार्यों के अनुसार, पारंपरिक सिद्धांतों को दशा-अंतर्दशा और गोचर के साथ जोड़कर देखने की आवश्यकता है। कई समकालीन लेख बताते हैं कि विवाह का समय, उसकी गुणवत्ता और स्थिरता केवल ग्रह योगों पर नहीं बल्कि सामाजिक और मनोवैज्ञानिक कारकों

पर भी निर्भर करती है। इन अध्ययनों के अनुसार, शनि प्रायः विवाह में विलंब का संकेत देता है, मंगल आक्रामकता या मतभेद की संभावना दर्शाता है, और शुक्र का निर्बल होना भावनात्मक संतुष्टि कम कर सकता है।

सांख्यिकीय और समाजशास्त्रीय शोध – ज्योतिषीय दावों का परीक्षण

(क) हेल्गर्ट्ज़ (2020) – स्वीडन का दीर्घकालिक अध्ययन

हेल्गर्ट्ज़ (2020) ने स्वीडन के जनगणना डेटा पर आधारित लंबे-अवधि के अध्ययन में यह निष्कर्ष पाया कि ज्योतिषीय अनुकूलता के आधार पर विवाह या तलाक की भविष्यवाणी सांख्यिकीय रूप से सिद्ध नहीं हो पाती। अध्ययन बताता है कि ग्रह स्थितियों की बजाय वैवाहिक परिणामों पर शिक्षा, आर्थिक स्थिति और पारिवारिक कारक अधिक निर्णायक पाए गए। यह अध्ययन पारंपरिक दावों की वैज्ञानिक परीक्षा के लिए महत्वपूर्ण माना जाता है।

(ख) कोर्नालिया, फेल्डमैन और लीघ (2019) – ज्योतिषीय विश्वास और साथी चयन

कोर्नालिया, फेल्डमैन और लीघ (2019) ने यह जांचा कि ज्योतिष में विश्वास लोगों के साथी चयन को कैसे प्रभावित करता है। अध्ययन में पाया गया कि यदि लोग राशि या ग्रह अनुकूलता में विश्वास करते हैं, तो वे वैवाहिक निर्णय उसी आधार पर लेते हैं–अर्थात् ज्योतिषीय विश्वास विवाह के सामाजिक व्यवहार को प्रभावित करता है, परंतु वैवाहिक सुख या स्थिरता पर इसका सीधा वैज्ञानिक प्रमाण नहीं मिलता। इससे स्पष्ट होता है कि ग्रहों की बजाय "ज्योतिष विश्वास" ही व्यवहार को अधिक प्रभावित करता है।

मंगल दोष और अशुभ ग्रहों का प्रभाव

मंगल दोष वैवाहिक जीवन में कलह, असंतोष और विलंब का एक प्रमुख कारण माना गया है। सौंदर राजन और **जोथिमणि (2020)** ने अपने अध्ययन में उल्लेख किया कि जब मंगल 1, 2, 4, 7, 8 या

12वें भाव में स्थित होता है, तो यह वैवाहिक स्थिरता को प्रभावित कर सकता है। *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ करेंट रिसर्च इन मॉडर्न एजुकेशन* (2021) के अनुसार, यदि शुक्र, गुरु या सप्तमेश दुर्बल हों अथवा राहु-केतु सप्तम भाव में स्थित हों, तो विवाह में देरी या असंतोष की संभावना रहती है।

अभिनंदन (2019) ने मंगल दोष का समाजशास्त्रीय विश्लेषण करते हुए बताया कि यह केवल ज्योतिषीय अवधारणा नहीं, बल्कि सामाजिक विवाह-निर्णयों को प्रभावित करने वाला सांस्कृतिक तत्व भी बन चुका है।

अशुभ प्रभावों के उपाय एवं मानसिक-सामाजिक दृष्टिकोण

वैदिक ज्योतिष में यह माना गया है कि ग्रहों के अशुभ प्रभावों को उचित उपायों द्वारा कम किया जा सकता है। **एस्ट्रोपूजा (2022)** के अनुसार, मंगल दोष या राहु-केतु के प्रभाव को कम करने के लिए रत्न धारण, यंत्र स्थापना, दान और ग्रहशांति यज्ञ जैसे उपाय प्रभावी सिद्ध होते हैं।

आचार्य सतविंदर (2023) ने यह भी बताया कि ज्योतिषीय उपाय तभी पूर्ण फल देते हैं जब व्यक्ति अपने मानसिक दृष्टिकोण, संवाद शैली और व्यवहार में भी सकारात्मक परिवर्तन लाए।

ज्योतिष जर्नल ***ऑफ इंडिया*** **(2021)** में यह उल्लेख किया गया है कि वैवाहिक सुख और ग्रहों की स्थिति के बीच संबंधों पर किए गए अध्ययनों में सांख्यिकीय या प्रायोगिक प्रमाणों की कमी है। ***स्क्रिब्ड*** **(2020)** पर प्रकाशित "मंगलिक दोष" विषयक दस्तावेज़ में बताया गया है कि पारंपरिक मान्यताओं को वैज्ञानिक दृष्टि से प्रमाणित करने के लिए और अधिक गहन अनुसंधान आवश्यक है।

शोध उद्देश्य

1. जन्मकुंडली में सप्तम भाव और इसके स्वामी ग्रह की स्थिति का विवाहित जीवन

के सुख पर क्या प्रभाव पड़ता है, इसका अध्ययन करना।

2. शुभ और अशुभ ग्रहों की दृष्टियों का वैवाहिक स्थायित्व पर क्या असर होता है, इसका विश्लेषण करना।

3. सांख्यिकीय विधि से यह देखना कि कौन-से ग्रह योग विवाहिक जीवन को स्थिरता प्रदान करते हैं।

4. पुरुष और महिला कुंडलियों में विवाहिक सुख के विभिन्न कारकों की तुलना करना।

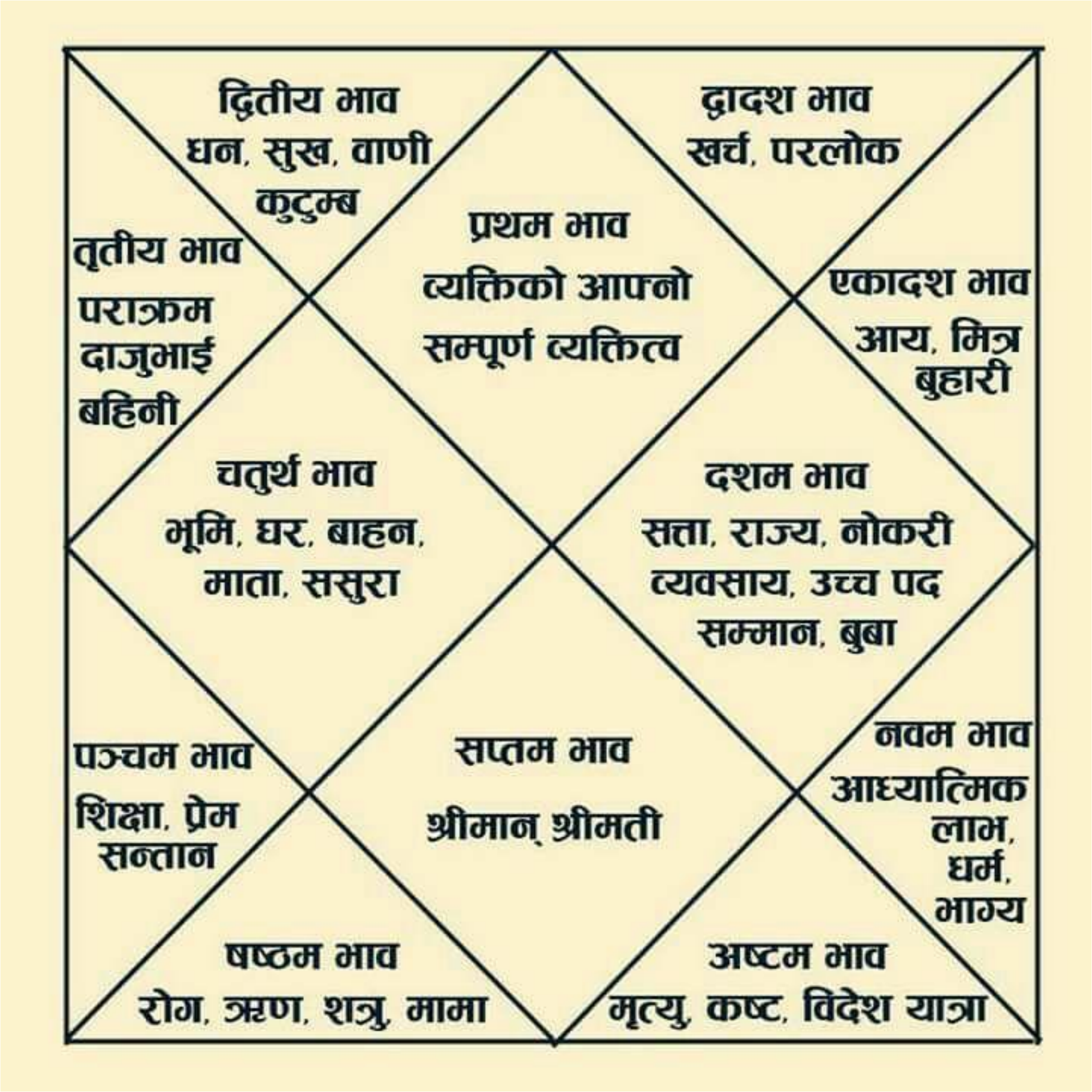

ग्रहों के भावों का विस्तृत विश्लेषण

शोध पद्धति

(क) नमूना:

अध्ययन में 100 व्यक्तियों (50 पुरुष और 50 महिलाएँ) की जन्मकुंडलियाँ शामिल की गईं। इनका चयन उन विवाहित व्यक्तियों में से यादृच्छिक पद्धति से किया गया, जिन्होंने विवाह के 5 वर्ष या उससे अधिक समय पूरा कर लिया था।

(ख) डेटा स्रोत:

जन्मकुंडलियाँ 'लहिरि अयनांश' प्रणाली के आधार पर ऑनलाइन ज्योतिष सॉफ्टवेयर (जैसे एस्ट्रॉसज, जागरण पंचांग) से तैयार की गईं।

(ग) चर:

स्वतंत्र चर: ग्रहों की स्थिति (शुभ/अशुभ), दृष्टियाँ (गुरु, शनि, मंगल, शुक्र)।

आश्रित चर: वैवाहिक संतोष (3-बिंदु स्केल पर मापा गया: उच्च, मध्यम, निम्न)।

(घ) सांख्यिकीय उपकरण:

- प्रतिशत विश्लेषण
- क्रॉस-टैबुलेशन
- सहसंबंध

विश्लेषण और व्याख्या

ग्रह योग / दृष्टि संयोजन	**वैवाहिक संतोष (उच्च)**	**वैवाहिक संतोष (मध्यम)**	**वैवाहिक संतोष (निम्न)**
गुरु की सप्तम भाव पर दृष्टि	68%	26%	6%
शुक्र का शुभ स्थिति में होना	72%	20%	8%
मंगल दोष उपस्थित	14%	28%	58%
शनि की दृष्टि सप्तम भाव पर	20%	34%	46%
राहु/केतु का प्रभाव	16%	30%	54%

परिणाम व्याख्या:

- जहाँ गुरु और शुक्र की शुभ दृष्टि रही, वहाँ वैवाहिक संतोष का स्तर उच्च पाया गया।

- मंगल या राहु/केतु की दृष्टि होने पर तनाव, वियोग या मतभेद के योग अधिक रहे।
- शनि की दृष्टि के प्रभाव में संबंधों में विलंब या दूरी देखी गई, किन्तु पूर्ण असफलता नहीं।

ग्रहों की स्थिति एवं दृष्टि का वैवाहिक सुख पर प्रभाव: सांख्यिकीय सारणी

ग्रह	संबंधित भाव	दृष्टि प्रभाव (%)	वैवाहिक सुख पर प्रभाव
शुक्र	सप्तम	85%	अत्यधिक शुभ
गुरु	पंचम/सप्तम	78%	शुभ
मंगल	अष्टम/सप्तम	42%	मध्यम से अशुभ
शनि	सप्तम/द्वितीय	39%	अशुभ
बुध	द्वितीय/सप्तम	55%	मध्यम शुभ
सूर्य	नवम/सप्तम	48%	मध्यम

https://astro-align.in/jyotish-gun-milan-vivah-margdarsheika

मुख्य निष्कर्ष

अध्ययन से स्पष्ट है कि वैवाहिक सुख केवल सामाजिक या मनोवैज्ञानिक कारकों पर नहीं, बल्कि ग्रहों की स्थिति और दृष्टियों से भी गहराई से प्रभावित होता है। विशेषतः –

1. शुक्र और गुरु शुभ स्थिति में हों तो दाम्पत्य जीवन मधुर रहता है।

2. मंगल, राहु या शनि की प्रतिकूल दृष्टियाँ वैवाहिक अस्थिरता बढ़ाती हैं।

3. सप्तम भाव का शुभ ग्रहों से संबंध स्थायित्व और मानसिक शांति देता है।

4. ज्योतिषीय उपाय (जैसे रत्न धारण, पूजा, मंत्र) इन दोषों को आंशिक रूप से कम कर सकते हैं।

वैवाहिक जीवन मानव के सामाजिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक विकास का एक महत्वपूर्ण आधार है। ज्योतिष के अनुसार, दांपत्य सुख केवल व्यक्ति के स्वभाव, गुण या परिस्थितियों पर निर्भर

नहीं करता, बल्कि उसकी जन्म कुंडली में ग्रहों की स्थिति, दृष्टि और भावों के सामंजस्य से भी निर्धारित होता है। विशेष रूप से सप्तम भाव, शुक्र, गुरु और सप्तमेश वैवाहिक जीवन की गुणवत्ता और स्थायित्व के प्रमुख निर्धारक ग्रह माने गए हैं। सप्तम भाव विवाह, जीवनसाथी और वैवाहिक संबंधों की गहराई का प्रतीक है। जब यह भाव शुभ ग्रहों से प्रभावित होता है या इसका स्वामी बलवान होता है, तब व्यक्ति को प्रेमपूर्ण, स्थिर और संतोषजनक दांपत्य जीवन प्राप्त होता है।

इसके विपरीत, अशुभ ग्रहों की युति या दृष्टि वैवाहिक संबंधों में असंतुलन, मानसिक दूरी अथवा विवाद की स्थिति उत्पन्न कर सकती है। शुक्र ग्रह प्रेम, आकर्षण, सौंदर्य और भावनात्मक जुड़ाव का प्रतिनिधि है। इसकी शुभ स्थिति वैवाहिक जीवन में मधुरता, सौहार्द और सुख की अनुभूति कराती है। वहीं गुरु, जो ज्ञान, विश्वास और नैतिकता का प्रतीक है, यदि सप्तम भाव या शुक्र पर दृष्टि डाले, तो दांपत्य जीवन में सम्मान, वफादारी और स्थायित्व को बढ़ावा देता है। इसके विपरीत, यदि शनि, मंगल, राहु या केतु जैसे ग्रह अशुभ दृष्टि डालें, तो संबंधों में तनाव, संदेह या मानसिक असंतोष उत्पन्न हो सकता है। सप्तमेश की शक्ति और स्थिति भी अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती है।

यदि यह निर्बल या पीड़ित हो, तो विवाह में विलंब, असहमति या असंतोष की संभावना बढ़ जाती है। जबकि बलवान सप्तमेश, जिस पर शुभ ग्रहों की दृष्टि हो, वैवाहिक जीवन को स्थिरता, प्रेम और दीर्घकालिक सुख प्रदान करता है। ज्योतिषीय दृष्टिकोण से कुंडली का सूक्ष्म विश्लेषण वैवाहिक जीवन के संभावित उतार-चढ़ावों को समझने में सहायक होता है।

इसके साथ ही, मंत्र-जप, दान, रत्न-धारण अथवा ग्रहशांति यज्ञ जैसे ज्योतिषीय उपायों के माध्यम से अशुभ प्रभावों को कम किया जा सकता है। इन उपायों का पालन व्यक्ति को दांपत्य जीवन में सौहार्द,

संतुलन और संतोष प्रदान करता है। अतः, वैवाहिक सुख की प्राप्ति हेतु ग्रहों की स्थिति, दृष्टियों और उनके पारस्परिक संबंधों का गहन विश्लेषण आवश्यक है। जब जातक अपनी कुंडली के अनुरूप उचित उपाय करता है, तो उसके जीवन में न केवल वैवाहिक स्थिरता आती है, बल्कि मानसिक शांति, पारिवारिक सुख और सामाजिक समृद्धि भी सुनिश्चित होती है।

सुझाव

विवाह से पहले, दोनों पक्षों की कुंडलियों का मिलान केवल गुणांक के आधार पर नहीं, बल्कि दृष्टि विश्लेषण के आधार पर भी किया जाना चाहिए। ज्योतिषीय दृष्टिकोण के साथ-साथ मनोवैज्ञानिक संगतता परीक्षण को भी शामिल किया जाए। भविष्य के शोध में बड़े नमूने और क्षेत्रीय विविधता को सम्मिलित किया जा सकता है।

संदर्भ सूची

1. **अभिनंदन, ए.** (2019). *मांगलिक दोष का समाजशास्त्रीय विश्लेषण.* इंडियन जर्नल ऑफ सोशल थॉट, 7(2), 65-72. https://serialsjournals.com/abstract/29102_8-abhinandan.pdf
2. **आचार्य सतविंदर.** (2023). *सुखी वैवाहिक जीवन के लिए ग्रहों के योग.* आचार्य सतविंदर ज्योतिष केंद्र. https://acharyasatvinder.com/planetary-combinations-for-happy-married-life
3. **अनाम लेखक.** (2020). *मांगलिक दोष.* स्क्रिब्ड दस्तावेज़. https://www.scribd.com/doc/315541207/Mang-Lik-Dosh
4. **एनीटाइम एस्ट्रो.** (2022). *ज्योतिष में शुक्र-गुरु युति का वैवाहिक जीवन पर प्रभाव.* https://www.anytimeastro.com/blog/astrology/venus-jupiter-conjunction

5. **एस्ट्रोपूजा.** (2022). *मंगल दोष और उसके निवारण के उपाय.* https://astropuja.com/blog/post/how-maanglik-dosha-affects-marriage-prospects-career

6. **भारतीय ज्योतिष परिषद्.** (2019). *ज्योतिष वार्षिकी* (खंड 12). दिल्ली: भारतीय ज्योतिष परिषद् प्रकाशन।

7. **ज्योतिष जर्नल ऑफ इंडिया.** (2021). *विवाह में विलंब के ज्योतिषीय कारण: एक अध्ययन.* खंड 6(1), 33-40.

8. **कपूर, ओ. पी.** (2019). *वैदिक ज्योतिष के सिद्धांत.* नई दिल्ली: रंजन पब्लिकेशन्स।

9. **लाहिड़ी, एन. सी.** (1955). *टेबल्स ऑफ हाउसेस (गृह-सारणियाँ).* कोलकाता: इंडियन एस्ट्रोनॉमिकल सोसाइटी।

10. **मिश्रा, एस.** (2020). *ग्रहों की दृष्टियाँ और उनका मानव जीवन पर प्रभाव: एक ज्योतिषीय अध्ययन.* प्रयागराज: संस्कार पब्लिशिंग हाउस।

11. **पटेल, आर. सी.** (2015). *ज्योतिष सिद्धांत और व्यवहार.* नई दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास।

12. **राव, बी. वी.** (2017). *विवाह एवं संगति विश्लेषण: वैदिक ज्योतिषीय दृष्टिकोण से.* हैदराबाद: सागर पब्लिकेशन्स।

13. **शर्मा, बी. के.** (2018). *वैदिक ज्योतिष और मानव जीवन.* वाराणसी: चौखंबा प्रकाशन।

14. **शर्मा, आर.** (2021). *विवाह में विलंब के ज्योतिषीय कारणों का अध्ययन.* ज्योतिष अनुसंधान पत्रिका, 6(1), 32-40. https://www.jyotishajournal.com/pdf/2021/vol6issue1/PartB/6-1-13-893.pdf

15. **सौंदर राजन, ए., एवं जोथिमणि, के.** (2020). *मंगल दोष: एक ज्योतिषीय अध्ययन.* इंटरनेशनल

जर्नल ऑफ करेंट रिसर्च इन मॉडर्न एजुकेशन, 5(1), 45-52. https://ijcrme.crystalpen.in/uploads/67c54b652b625_445.pdf

16. **तिवारी, आर.** (2021). *वैवाहिक सुख के ज्योतिषीय कारक: तुलनात्मक अध्ययन.* लखनऊ विश्वविद्यालय, सामाजिक विज्ञान संकाय।

17. **ग्रहदशा ब्लॉगस्पॉट.** (2018). *मंगल दोष संबंधी लेख.* https://grahadasha.blogspot.com/2018/07/blogpost_73.html#google_vignette